This question paper contains 5 printed pages]

Code No. : 28 (II) *Roll No. ....*

0(CCEM)9

HINDI

Paper : II

Time Allowed : 3 hours] *[Maximum Marks : 300*

Note : (i) *Answers must be written in Devnagri.*

(ii) *Number of marks carried by each question are indicated at the end of the question.*

(iii) *Part/Parts at the same question must be answered together and should not be interposed between answers to other questions.*

(iv) ***The answer to each question or part thereof should begin on a fresh page.***

(v) ***Your answers should be precise and coherent.***

(vi) *Candidates should attempt five questions taking at least* ***two*** *from each Section. Questions No.* **1** *is compulsory.*

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** अवतरणों की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए : 20 × 4 = 80

(क) सतगुर की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार।।

P. T. O.

गूंगा हूवा बाबला, बहरा हुआ कान।

पाऊँ थैं पंगुल भया, सतगुर मार्या बाण।।

(ख) हमरे कौन जोग ब्रत साधै ?

मृगत्वच, भस्म अधारि, जटा को को इतनो अवराधै ?

जाकी कहूँ थाह नहिं पैए, अगम, अपार, अगाधै।

गिरिधर लाल छबीले मुख पर इतै बाँध को अवराधै।

आसन पवन विभूति मृगछाला ध्याननि को अवराधै ?

सूरदास मानिक परिहरि कै राख गाँठि को बाँधै ?

(ग) कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे।।

सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी।।

तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी।।

सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी।।

सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे।।

(घ) राम भजो राम भजो राम भजो भाई।

राम के भजे से गनिका तर गई,
राम के भजे से गीध गति पाई।

राम के नाम से काम बने सब,
राम के भजन बिनु सबै नसाई।।

राम के नाम से दोनों नयन बिनु
सूरदास भए कबिकुलराई।
राम के नाम से घास जंगल की,
तुलसी दास भए भजि रघुराई।।

(ङ) नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मुदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ-बन बीच गुलाबी रंग।।
आह! वह मुख! पश्चिम के व्योम
बीच जब घिरते हों घनश्याम;
अरुण रवि मण्डल उनको भेद
दिखाई देता हो छविधाम।

(च) धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित – काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ – समर।
शुचिते, पहनाकर चीनांशुक
रख सका न तुझे अतः दधिमुख।

(छ) तू जो बात नहीं समझती, उसमें टाँग क्यों अड़ाती है। भाई! मेरी लाठी दे दे और अपना काम देख। यह इसी मिलते – जुलते रहने का परसाद है कि अब तक जान बची हुई है, नहीं कहीं पता न लगता कि किधर गये। गाँव में इतने आदमी तो हैं, किस पर बेदखली नहीं आयी, किस पर कुड़की नहीं आयी। जब दूसरे के पाँवों – तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशल है।

(ज) सेनापति! देखो, उन कायरों को रोको। उनसे कह दो कि आज रणभूमि में पर्वतेश्वर पर्वत के समान अचल है। जय–पराजय की चिन्ता नहीं। इन्हें बतला देना होगा कि भारतीय लड़ना जानते हैं। बादलों से पानी बरसने की जगह वज्र बरसें, सारी गज–सेना छिन्न–भिन्न हो जाय, रथी विरथ हो, रक्त के नाले धमनियों से बहें, परन्तु एक पग भी पीछे हटना पर्वतेश्वर के लिए असम्भव है।

SECTION – A

2. कबीर की भक्ति भावना का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 55

3. भ्रमरगीत काव्य परम्परा में सूरदास का स्थान निर्धारित कीजिए। 55

4. 'तुलसीदास की भक्ति भावना का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 55

5. 'राष्ट्रीयता और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' विषय की समीक्षा कीजिए। 55

6. प्रेमचंद की कहानियों की विशेषताएँ सोदाहरण लिखियें। 55

SECTION – B

7. राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में 'अंधेर नगरी' नाटक विषय की समीक्षा कीजिए। 55

8. 'गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य है' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 55

9. नाटक के तत्त्वों के आधार पर चन्द्रगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए। 55

10. निराला द्वारा रचित 'सरोज स्मृति' शीर्षक कविता की विशेषताएँ लिखिए। 55

11. अज्ञेय और उनका शेखर एक जीवनी' विषय का विवेचन कीजिए। 55